मंटो की कहानियाँ

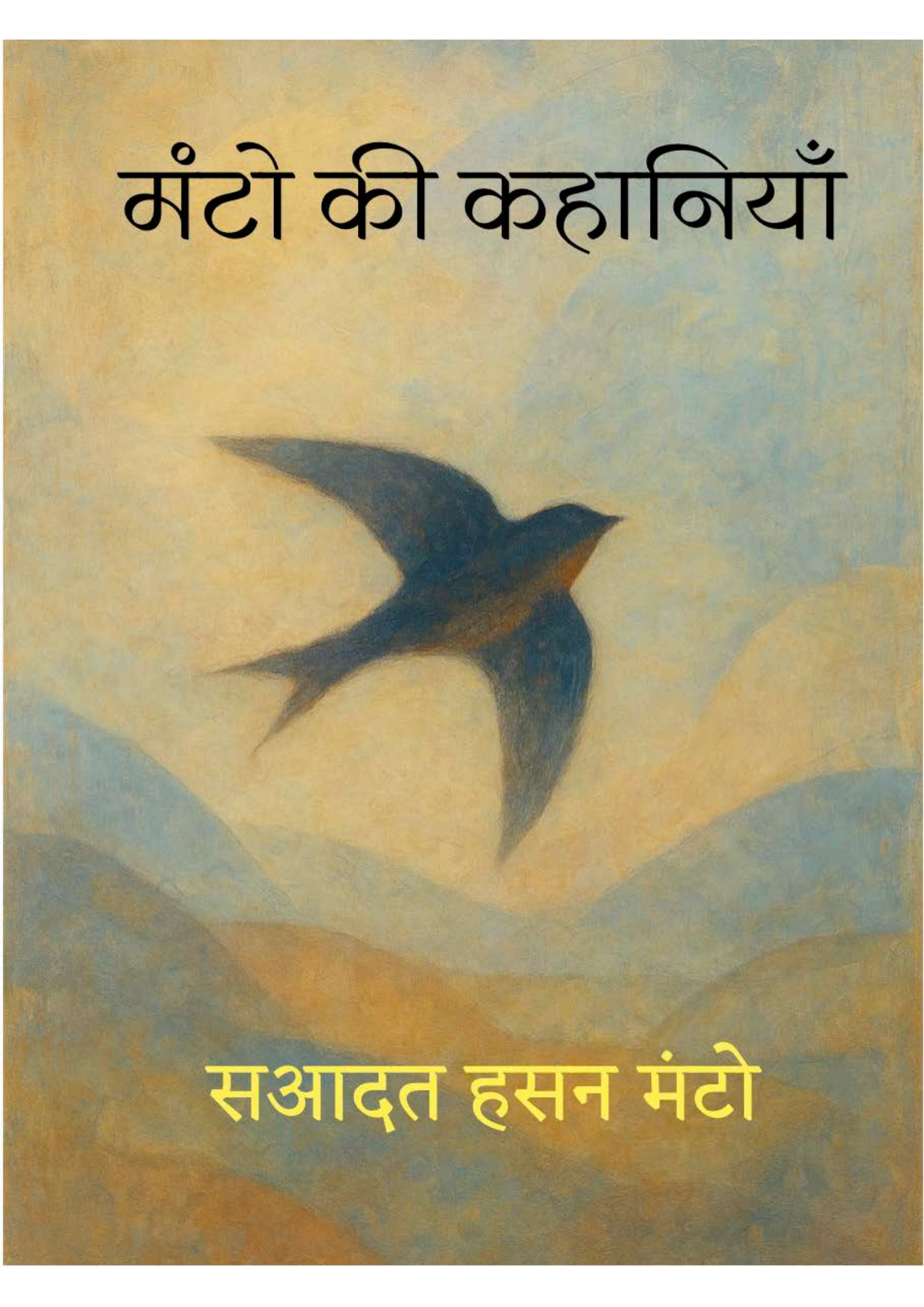

सआदत हसन मंटो

मंटो की कहानियाँ

कहानी संग्रह



सआदत हसन मंटो

अनुक्रम

इश्क पर जोर नहीं	4
ऊपर, नीचे और दरमियान	14
खोल दो	24
चुगद	30
टोबा टेकसिंह	40
तरक्की पसंद	53
तोड़ दो	72
दो कौमें	76
नंगी आवाजें	89
फुंदने	101
बस स्टैंड	115
बाबू गोपीनाथ	120
बू	146

मंतर 157

यजीद 172

लायसैंस 188

शरीफन 201

सियाह हाशिए 208

सौ कैण्डल पॉवर का बल्ब 219

इश्क पर जोर नहीं

मेरे बारे में कुछ लोगों को यह शिकायत है कि मैं इश्किया कहानियाँ नहीं लिखता। मेरे अफसानों में क्योंकि इश्क और मुहब्बत की चाश्नी नहीं होती, अत: वह बिल्कुल सपाट होते हैं। मैं अब इश्किया कहानी लिख रहा हूँ, जिससे लोगों की शिकायत किसी हद तक दूर हो जाए।

जमील नाम यदि आपने पहले नहीं सुना तो अब सुन लीजिए। उसका परिचय संक्षिप्त तौर पर कराये देता हूं। वह मेरा बचपन का मित्र था। हम एक साथ स्कूल में पढ़ते थे। फिर कॉलेज में एक साथ दाखिल हुए। मैं एम.ए. में फेल हो गया और वह उत्तीर्ण। मैंने पढ़ाई छोड़ दी और उसने पढ़ाई जारी रखी। डबल एम.ए. करके न जाने कहां गायब हो गया। केवल इतना सुनने में आया था कि उसने एक पांच बच्चों वाली स्त्री से शादी कर ली थी और आबादान चला गया था। वहां से लौट आया, या वहीं रहा, इसके विषय में मुझे कुछ मालूम नहीं।

वह बड़ा आशिक मिजाज था। स्कूल के दिनों में ही उसका मन बेकरार रहता था कि वह किसी लड़की के प्रेम में गिरफ्तार हो जाये। मुझे ऐसी गिरफ्तारी में कोई दिलचस्पी नहीं थी, मगर उसकी सरगर्मियों में जो इश्क़ के मुालि◌ंक थी, मैं बराबर का भाग लिया करता था।